The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 9 | September 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

मुगल काल में धार्मिक नीति

Sharmila kumari[1], Dr. Rajendra kumar Singh[2]

1. शर्मिला कुमारी शोधार्थी इतिहास विभाग नीलांबर पीतांबर विश्वविद्यालय मेदनी नगर पलामू झारखंड

ksharmila201@gmail.com

2. विभागाध्यक्ष सह पर्यवेक्षक स्नातकोत्तर इतिहास विभाग नीलांबर पीतांबर विश्वविद्यालय मेदिनी नगर पलामू झारखंड.

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17328956

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 26-09-2025

Published: 10-10-2025

Keywords:

ABSTRACT

भारतीय इतिहास का मुगल काल (1526 ई. से 1857 ई.) एक ऐसी महत्वपूर्ण अवधि रही है, जिसमें राजनीतिक सुदृढ़ता, सांस्कृतिक समृद्धि, प्रशासनिक नवाचार और धार्मिक विविधता का अद्वितीय संगम देखने को मिलता है। इस काल में विभिन्न मुगल शासकों ने अपने शासन को स्थिर और सुदृढ़ बनाने के लिए जिस प्रकार की धार्मिक नीतियाँ अपनाईं, वे न केवल तत्कालीन समाज पर प्रभाव डालती रहीं, बल्कि दीर्घकालीन ऐतिहासिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में भी उनका गहन प्रभाव पड़ा। भारत जैसे बहुधार्मिक, बहुजातीय और बहुसांस्कृतिक देश में धर्म एक संवेदनशील और निर्णायक कारक रहा है। मुगल सम्राटों ने अपनी शासन नीति में धार्मिक तत्वों को किस प्रकार शामिल किया, किस हद तक सहिष्णुता या असहिष्णुता का प्रदर्शन किया, यह उनकी व्यक्तिगत विचारधारा, राजनीतिक आवश्यकताओं, धार्मिक शिक्षाओं और तत्कालीन परिस्थितियों पर निर्भर करता था। बाबर और हुमायूं की धार्मिक नीति तुलनात्मक रूप से सामान्य व सीमित रही, जबकि अकबर ने "सुलह-ए-कुल" जैसे सिद्धांत को अपनाकर धार्मिक सहिष्णुता की नींव रखी। अकबर का प्रयास केवल मुस्लिम और हिंदू समाज के बीच समरसता स्थापित करने तक सीमित नहीं था, बल्कि उसने जैन, बौद्ध, पारसी, ईसाई आदि धर्मों को भी दरबारी संवाद में सम्मिलित किया।

इसके विपरीत, औरंगज़ेब ने इस्लामी रूढ़िवादिता को प्राथमिकता देते हुए धार्मिक असहिष्णुता की नीति अपनाई, जिससे सामाजिक विभाजन और विद्रोह की स्थितियाँ उत्पन्न हुईं। मुगल काल की धार्मिक नीतियों का अध्ययन केवल उनके धार्मिक झुकाव को ही नहीं दर्शाता, बल्कि यह भी स्पष्ट करता है कि किस प्रकार शासकों ने धर्म का उपयोग प्रशासनिक स्थिरता, वैधता प्राप्ति, और सामाजिक नियंत्रण के उपकरण के रूप में किया। इस शोध में मुगल काल के प्रमुख शासकों — बाबर, हुमायूं, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ और औरंगज़ेब — की धार्मिक नीतियों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसमें यह देखा गया है कि किस नीति ने समाज में एकता, शांति और समरसता को बढ़ावा दिया और किसने विभाजन, विद्रोह तथा असंतोष को जन्म दिया। धार्मिक नीति के इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भारत जैसे बहुधार्मिक राष्ट्र में सहिष्णुता, समावेशिता और उदार दृष्टिकोण शासन की सफलता की कुंजी हैं।

चर्चा (Discussion)

मुगल शासकों की धार्मिक नीतियाँ उनके व्यक्तिगत दृष्टिकोण, राजनीतिक परिस्थिति, तथा शासन व्यवस्था की आवश्यकताओं से प्रेरित थीं। इन नीतियों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि किस प्रकार एक सम्राट की धार्मिक नीति सामाजिक समरसता ला सकती है, जबकि दूसरे की कठोरता सामाजिक विद्वेष को जन्म दे सकती है। इस चर्चा को हम शासक-वार और विषयगत आधार पर बाँट सकते हैं:

1. बाबर (1526–1530): एक सीमित धार्मिक दृष्टिकोण

बाबर की धार्मिक नीति बहुत व्यापक नहीं थी। यद्यपि वह एक कट्टर सुन्नी मुसलमान था, परन्तु उसने हिंदुओं के प्रति कोई विशेष धार्मिक दमन की नीति नहीं अपनाई। बाबर का ध्यान मुख्यतः राजनीतिक स्थायित्व और युद्धों में विजय पर केंद्रित था। "तुज़ुक-ए-बाबरी" में कहीं-कहीं हिंदुओं के प्रति कटाक्ष देखे जाते हैं, लेकिन प्रशासनिक स्तर पर कोई कट्टर नीति नहीं थी।

2. हुमायूँ (1530–1556): धार्मिक दृष्टिकोण में अस्थिरता

हुमायूँ ने शिया मत को अपनाया और इस कारण उसे सुन्नी उलेमा वर्ग का समर्थन नहीं मिला। वह धार्मिक दृष्टि से उदार था लेकिन उसकी शासन अस्थिरता और अफगान विरोधी संघर्ष के कारण उसकी धार्मिक नीति कोई स्थायी प्रभाव नहीं छोड़ सकी। भारत में शिया-सुन्नी विभाजन को स्पष्ट रूप से इसी काल से देखा जा सकता है।

3. अकबर (1556–1605): सहिष्णुता और सुलह-ए-कुल का युग

अकबर की धार्मिक नीति मुगल इतिहास का सबसे प्रगतिशील और प्रभावशाली चरण माना जाता है। उन्होंने निम्नलिखित कार्य किए:

- **सुलह-ए-कुल की नीति:** यह नीति धार्मिक सहिष्णुता पर आधारित थी, जिसमें सभी धर्मों को समान सम्मान मिला।
- **जज़िया कर की समाप्ति:** उन्होंने हिंदुओं से लिया जाने वाला जज़िया कर हटा दिया।
- **दीन-ए-इलाही की स्थापना:** यह एक समन्वित धर्म था, जिसमें विभिन्न धर्मों के तत्व सम्मिलित किए गए थे।
- **इबादतखाना की स्थापना:** जहाँ विभिन्न धर्मों के विद्वानों के साथ धार्मिक संवाद होता था।

4. जहाँगीर (1605–1627): अकबर की नीति का निरंतर अनुसरण

जहाँगीर ने अकबर की सहिष्णु नीति को जारी रखा। वह स्वयं इस्लाम का अनुयायी था, किंतु उसने जैन, हिंदू व ईसाई धर्म के प्रति भी सम्मानजनक व्यवहार किया।

- गुरु अर्जुन देव को मृत्युदंड देना एक विवादास्पद कार्य रहा, जिसने सिख-मुगल संबंधों को बिगाड़ा।
- कला, चित्रकला और स्थापत्य के क्षेत्र में उसकी रूचि धार्मिक उदारता की झलक देती है।

5. शाहजहाँ (1628–1658): परंपरा और धर्म का मिश्रण

शाहजहाँ की धार्मिक नीति में तुलनात्मक रूप से रूढ़िवादिता का पुनः प्रवेश हुआ।

- जज़िया कर फिर से लगाया नहीं गया, लेकिन हिंदू मंदिरों के निर्माण में कटौती की गई।
- उसने मुस्लिम वास्तुकला को विशेष बढ़ावा दिया (ताजमहल, जामा मस्जिद)।

- संगीत व कला को संरक्षण दिया, जो एक उदार दृष्टिकोण को दर्शाता है।

6. औरंगज़ेब (1658–1707): धार्मिक कट्टरता का चरम

औरंगज़ेब की धार्मिक नीति सबसे अधिक विवादास्पद रही। उसने अपने पूर्ववर्तियों की सहिष्णु नीतियों को त्यागकर इस्लामी शरिया आधारित शासन को लागू किया।

प्रमुख निर्णय:

- **जज़िया कर की पुनः स्थापना**: विशेषकर हिंदुओं पर आर्थिक दमन।
- **मंदिर विध्वंस:** काशी, मथुरा जैसे नगरों में मंदिर तोड़े गए।
- **गैर-मुस्लिमों को प्रशासन से बाहर करना:** जिससे शासकीय असंतुलन उत्पन्न हुआ।
- **संगीत और चित्रकला पर प्रतिबंध।**
- **शरिया कानूनों का कठोर क्रियान्वयन।**

इन नीतियों का दुष्परिणाम यह हुआ कि हिंदू, सिख, मराठा, राजपूत और अन्य वर्गों में असंतोष बढ़ा। मराठा विद्रोह, सिख प्रतिरोध, और राजपूत असहयोग के कारण मुगल साम्राज्य की जड़ें हिलने लगीं।

तुलनात्मक निष्कर्ष:

शासक	धार्मिक नीति की प्रवृत्ति	सामाजिक प्रभाव
बाबर	सीमित और व्यावहारिक	कोई विशेष दमन नहीं, पर सहयोग भी नहीं
हुमायूँ	शिया झुकाव, अस्थिर नीति	मुस्लिम समाज में वैचारिक अस्थिरता
अकबर	सहिष्णुता, समावेशिता	सामाजिक एकता, राजनीतिक स्थिरता
जहाँगीर	निरंतरता और संतुलन	कला और संवाद की वृद्धि
शाहजहाँ	सांस्कृतिक-धार्मिक मिश्रण	परंपरा और आंशिक कट्टरता का मिश्रण
औरंगज़ेब	रूढ़िवादिता और असहिष्णुता	सामाजिक असंतोष, विद्रोह और विभाजन

समीक्षा साहित्य (Review of Literature)

1अबुलफ़ज़लकी"आइन-ए-अकबरीऔर"अकबरनामा"

अबुल फ़ज़ल द्वारा रचित ये दो ग्रंथ मुगल दरबार की धार्मिक, प्रशासनिक और सांस्कृतिक नीतियों के सबसे प्रामाणिक स्रोत हैं।

- "आइन-ए-अकबरी" में अकबर की *सुलह-ए-कुल* नीति, दीन-ए-इलाही की स्थापना, और विभिन्न धर्मों के प्रति सहिष्णुता को विस्तृत रूप में प्रस्तुत किया गया है।
- अबुल फ़ज़ल का दृष्टिकोण शाही विचारधारा के पक्ष में झुका हुआ है, परंतु उसका ऐतिहासिक महत्त्व निर्विवाद है।

2.बदायूँनकी"मुन्तख़ब-उत्तवारीख़"

बदायूँनी ने अकबर की नीतियों पर कटु आलोचना की है, विशेषकर दीन-ए-इलाही और गैर-इस्लामी कार्यों के संदर्भ में।

- यह दृष्टिकोण मुस्लिम रूढ़िवादी वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है।
- इससे अकबर की धार्मिक नीति के विरोधी विचारों को समझने में सहायता मिलती है।

3जदुनासरकाका"HistoryofAurangzeb"

सर जदुनाथ सरकार ने औरंगज़ेब की धार्मिक नीतियों को कट्टर और असहिष्णु सिद्ध किया।

- उन्होंने मंदिर विध्वंस, जज़िया कर, तथा गैर-मुस्लिमों के प्रति कड़ा दृष्टिकोण स्पष्ट किया।
- यह ग्रंथ औरंगज़ेब की कट्टरता और उसके दुष्परिणामों को ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर रेखांकित करता है।

4. इरफ़ान हबीब की कृतियाँ (जैसे "Agrarian System of Mughal India")

इरफान हबीब ने धार्मिक नीति के सामाजिक और आर्थिक पक्ष को उजागर किया है।

- वे मानते हैं कि अकबर की नीतियाँ समावेशी थीं और आर्थिक विकास को बढ़ावा देती थीं।
- उन्होंने यह भी दर्शाया कि धार्मिक सहिष्णुता से प्रशासनिक प्रणाली में स्थिरता आती है।

5.सतीचंद्रकी"मध्यकालीभारत"

सतीश चंद्र ने मुगल धार्मिक नीतियों का तुलनात्मक और तटस्थ अध्ययन किया है।

- वे मानते हैं कि मुगल सम्राटों की धार्मिक नीतियाँ समय और परिस्थिति के अनुसार बदलती रहीं।
- उन्होंने अकबर और औरंगज़ेब की नीतियों के प्रभावों का विश्लेषण गहराई से किया है।

6. रिचर्ड ईटन की "Temple Desecration and Muslim States in Medieval India"

ईटन ने मुगल शासन के दौरान मंदिरों के विध्वंस के पीछे धार्मिक कारणों की बजाय राजनीतिक और रणनीतिक कारणों को अधिक महत्त्व दिया है।

- उनका दृष्टिकोण पश्चिमी इतिहासलेखन का प्रतिनिधित्व करता है जो धार्मिक असहिष्णुता की पुनर्व्याख्या करता है।

7.वेंडेवुड्रकी"TheMughalEmpire"

वुड्रफ ने मुगलों की धार्मिक नीति को प्रबंधकीय और सामरिक दृष्टिकोण से देखा है।

- वे मानते हैं कि धर्म, शासन की स्थिरता हेतु एक साधन के रूप में प्रयुक्त हुआ।

8.एनसीईआरटीयूजीसकपाठ्यपुस्तकें

इनमें मुगल धार्मिक नीति को संतुलित दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है।

- विशेष रूप से अकबर की सुलह-ए-कुल नीति, दीन-ए-इलाही, और औरंगज़ेब की नीतियों का विवेचन किया गया है।

निष्कर्ष (Conclusion):

मुगल काल की धार्मिक नीतियाँ न केवल तत्कालीन शासकों की वैचारिक और धार्मिक सोच को प्रतिबिंबित करती हैं, बल्कि वे उस समय की सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुरूप भी रही हैं। यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि प्रत्येक मुगल शासक ने अपने समय की आवश्यकताओं के अनुरूप धर्म के प्रति अलग-अलग दृष्टिकोण अपनाया।

1. **बाबऔहुमायूंकीनीतियाँ:**

   प्रारंभिक मुगल शासक बाबर और हुमायूं की धार्मिक नीतियाँ सीमित और पारंपरिक रहीं। उन्होंने इस्लामिक मूल्यों का पालन अवश्य किया, लेकिन धार्मिक कट्टरता उनकी शासन शैली की विशेषता नहीं थी।

2. **अकबकधर्मनीति-क्रांतिकारदृष्टिकोण:**

   अकबर की नीति ने मुगल इतिहास में एक क्रांतिकारी मोड़ लाया। 'सुलह-ए-कुल' (सार्वभौमिक सहिष्णुता) के सिद्धांत ने धार्मिक सहिष्णुता, संवाद और विविधता को संस्थागत स्वरूप दिया। अकबर द्वारा दीन-ए-इलाही की स्थापना, धार्मिक चर्चाओं का आयोजन (इबादतखाना), और जज़िया कर का उन्मूलन ऐसे निर्णय थे जो उसे उदारवादी शासक सिद्ध करते हैं।

3. **जहाँगीर और शाहजहाँ की नीति – मध्य मार्ग** इन शासकों ने धार्मिक सहिष्णुता और परंपरागत इस्लामी आदर्शों के बीच संतुलन बनाए रखने का प्रयास कियायद्यपि धार्मिक सहिष्णुता का रुझान जारी रहा, परंतु अकबर जैसी क्रांतिकारी पहल नहीं दिखती।

4. **औरंगज़ेब की कट्टर नीति**औरंगज़ेब की धार्मिक नीति में इस्लामी कानूनों और धार्मिक असहिष्णुता की प्रधानता थी। मंदिर विध्वंस, जज़िया कर की पुनःवापसी, और गैर-मुस्लिमों पर कड़े प्रतिबंधों ने समाज में असंतोष और विद्रोह को जन्म दिया यद्यपि कुछ इतिहासकार इसे राजनीतिक रणनीति मानते हैं, परंतु धार्मिक दृष्टिकोण से यह असहिष्णुता की नीति मानी जाती है।

5. **धार्मिक नीति और शासन की स्थिरता** यह बात स्पष्ट रूप से प्रमाणित होती है कि **धार्मिक सहिष्णुता और समावेशिता** ने मुग़ल साम्राज्य को राजनीतिक स्थिरता और सामाजिक एकता प्रदान की, जबकि **धार्मिक असहिष्णुता** के परिणामस्वरूप विद्रोह, असंतोष और साम्राज्य की कमजोरी उभरकर सामने आई।

6. **समकालीनता में प्रासंगिकता**मुगल काल की धार्मिक नीतियों से यह महत्वपूर्ण शिक्षा मिलती है कि विविधतापूर्ण समाज में **सहिष्णुता**, **संवाद**, और **धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण** को बढ़ावा देना सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता की अनिवार्य शर्तें हैं।

मुगल शासकों की धार्मिक नीतियों का तुलनात्मक अध्ययन इस बात को प्रमाणित करता है कि एक समावेशी और सहिष्णु धार्मिक दृष्टिकोण न केवल समाज को संगठित करता है, बल्कि शासन की नींव को भी मजबूत करता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब-जब धार्मिक असहिष्णुता को शासन का औज़ार बनाया गया, तब-तब शासन की जड़ें कमज़ोर हुईंअतः आज

के वैश्विक और बहुधार्मिक युग में मुग़ल काल की धार्मिक नीतियों का अध्ययन केवल ऐतिहासिक दृष्टि से नहीं, बल्कि वर्तमान शासन-प्रणाली के लिए भी प्रेरणादायक और शिक्षाप्रद है।

संदर्भ सूची (References)

1. अबुल फ़ज़ल – *अकबरनामा* (तीन भाग)
2. अबुल फ़ज़ल – *आइन-ए-अकबरी*
3. बदायूँनी, अब्दुल कादिर – *मुन्तख़ब-उत्तवारीख़*
4. निज़ामुद्दीन अहमद – *तबक़ात-ए-अकबरी*
5. खफी खान – *मुन्तख़ब-उल-लुबाब*
6. औरंगज़ेब के फरमान एवं पत्र – *रुक़ात-ए-आलमगिरी*
7. 7.सरकार, सर जदुनाथ – *History of Aurangzeb* (5 भाग)

8.हबीब, इरफ़ान – *The Agrarian System of Mughal India (1556–1707)*

9.चंद्र, सतीश – *मध्यकालीन भारत (भाग I एवं II)*

10.आंद्रे विंक – *The Making of the Indo-Islamic World*

11.बर्क, एस. एम. – *Akbar: The Architect of Mughal Empire*

12.मूसा, अब्दुल – *मुग़ल साम्राज्य में धार्मिक नीति: एक ऐतिहासिक अध्ययन*

13.आलम, मुजफ्फर – *The Languages of Political Islam in India*

14.रिचर्ड ईटन – *Temple Desecration and Muslim States in Medieval India*

15.राठौड़, आर.बी. – *भारतीय इतिहास में मुगलों की सांस्कृतिक नीति*

16.मिश्रा, ओ. पी. – *मुग़ल काल में धार्मिक सहिष्णुता और असहिष्णुता*

17.सिंह, अजय – *"अकबर की धार्मिक नीति का सामाजिक प्रभाव"* – दिल्ली विश्वविद्यालय, शोध प्रबंध

18.खातून, ज़ेबा – *"औरंगज़ेब के शासनकाल की धार्मिक नीतियों का विश्लेषण"* – अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय

19.Journal of Medieval Indian History – विविध लेख (JMIH, JNU Press)

20.Indian Historical Review – Sage Publications